

थे, इस पर उन्होंने कहा, 'हां, बिल्कुल। माही भाई लंबे समय तक भारत और चेन्नई सुपर किंग्स के लिए खेल चुके हैं और उन्होंने एक पैटर्न सेट कर दिया है कि आप किसी भी बल्लेबाज के साथ सेट होने के बाद साझेदारी बना सकते हैं, इसके बाद वह बड़े शॉट्स खेलते थे।'

संपादकीय

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यूपी के ग्रेटर नोएडा में नई फिल्म सिटी बनाने की कवायद शुरू कर दी है। इसके लिए यूपी के गौतम बुद्ध नगर में यमुना एक्सप्रेस-वे के पास एक हजार एकड़ जमीन चिन्हित कर ली गई है। योगी वहां विश्व स्तरीय सुविधाओं से युक्त फिल्म सिटी बनाने की योजना पर काम कर रहे हैं। इसी सिलसिले में उन्होंने मुंबई का दौरा कर फिल्म अभिनेता अक्षय कुमार सहित अनेक फिल्मकारों के साथ चर्चा की है। योगी आदित्यनाथ के मुंबई दौरें से ठाकरे सरकार परेशान हो गई हैं। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने चेतावनी दी है कि यदि फिल्म सिटी को उनके राज्य से दूसरे राज्य में जबरन ले जाया जाएगा तो इसका विरोध करेंगे। ठाकरे सरकार में शामिल कांग्रेस और एनसीपी ने भी बॉलीवुड के कथित बंटवारे को लेकर अपना विरोध दर्ज कराया है। इसके जवाब में यूपी के सीएम योगी ने स्पष्ट किया है कि वे मुंबई से फिल्म सिटी को लेजाने के लिए नहीं आए हैं बल्कि बॉलीवुड को और एक नया अवसर देने आए हैं। उनका कहना है कि ग्रेटर नोएडा में प्रस्तावित नई फिल्म सिटी में फिल्मकारों को फिल्म निर्माण के लिए विश्व स्तरीय सुविधाएं प्रदान की जाएंगी और सुरक्षित माहौल उपलब्ध कराया जाएगा। सीएम योगी के इसी बयान को लेकर शिवसेना ने बात का बतंगड़ बनाना शुरू कर दिया है और यह आरोप लगाया है कि योगी ने महाराष्ट्र का अपमान किया है। यह वहीं शिवसेना है जो पहले बॉलीवुड पर अंडर वर्ल्ड के साप में काम करने का आरोप लगाया करती थी। यह बात किसी से छिपी नहीं है कि बॉलीवुड में अंडर वर्ल्ड का काला पैसा लगता है और आज भी दाउद इब्राहिम के गुणों द्वारा फिल्म कारों को डरा धमकाकर उनसे हप्ता वसूला जाता है। इस बीच बॉलीवुड में ड्रम्स माफिया ने भी अपना शिकंजा कसना शुरू कर दिया है। एक के बाद एक कई नामी गिरामी कलाकारों के नाम ड्रम्स के मामले में सामने आ रहे हैं। बॉलीवुड में हिन्दी भाषी प्रदेशों से आने वाले नए कलाकारों के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार किए जाने की शिकायतें भी सामने आई हैं। ऐसी स्थिति में अगर देश के सबसे बड़े हिन्दी भाषी राज्य उत्तर प्रदेश में नई फिल्म सिटी बनाई जा रही है तो इसे लेकर फसाद करना समझ से परे है। मुंबई में बॉलीवुड का अस्तित्व बना रहेगा वहां जो फिल्मकार रहना चाहे और अपना काम करना चाहे उसे कोई जबरन कैसे ले जा सकता है। इस मुद्दे को लेकर व्यर्थ का बवाल खड़ा नहीं किया जाना चाहिए।

विचार

दोनों अपनी अकड़ छोड़ें



डॉ. वेदप्रसाद वैदिक

कल आशा बंधी थी कि किसान-आंदोलन का कोई सर्वसमावेशी हल निकल आएगा। कृषि मंत्री नरेंद्र तोमर ने किसानों की बात रख ली और तुरंत उन्हें बात करने के लिए बुला लिया। अब भी अच्छा हुआ कि सरकार ने सारे किसानों के बुराई मैदान में इकट्ठे होने के आग्रह को छोड़ दिया लेकिन किसानों ने दिल्ली पहुंचने के लोकप्रिय परंपरागत रास्तों पर धरने दे दिए हैं। दिल्ली की जनता को फल और सब्जियां मिलना मुहाल हो रहा है और सैकड़ों टक सीमा के नाकों पर खड़े हुए हैं। इससे किसानों को भी नुकसान हो रहा है। व्यापारी भी परेशान हैं। यह तब है जबकि दिल्ली की जनता ने किसानों के लिए अपनी तिजोरियां खोल दी हैं और केंजरीवाल-प्रशासन भी उनकी सुविधाओं का ध्यान रख रहा है। यदि ये धरने और प्रदर्शन लंबे विखंच गए तो किसानों के प्रति आम जनता में आक्रोश पैदा हो सकता है, खासकर पंजाब और हरयाणा के किसानों के लिए, जो अन्य भारतीय किसानों के मुकाबले काफी ठीक-ठाक हैं। कृषि मंत्री तोमर का यह प्रस्ताव व्यावहारिक है कि पांच किसान नेताओं की कमेटी बनाई जाए, जो सरकार के साथ बैठकर इस समस्या का हल निकाले लेकिन बातों में शामिल तीन-चार दर्जन किसान नेता इस बात से सहमत नहीं हैं। जाहिर है कि इस आंदोलन के कोई सर्वनायक नेता नहीं हैं। पता नहीं, अब आगे बात कैसे चलेगी ? सरकार तो 100 नेताओं के साथ एक साथ बात कर सकती है लेकिन वहां अपनी-अपनी ढपली और अपने-अपने राग से सब परेशान हो जाएंगे। जहां तक तीनों कृषि-कानूनों को वापस लेने की बात है, यह शुद्ध अतिवाद है, दादगिरी है। सिर्फ 6 प्रतिशत किसानों का प्रतिनिधित्व करनेवाले इन नव-नेताओं के आगे सरकार आत्म-समर्पण क्यों करे ? यदि वे अहिंसक प्रदर्शन करते हैं तो जरूर करें लेकिन यदि वे हिंसा पर उतारू हो गए तो सरकार को मजबूरन सख्त कारवाई करनी होगी। इसका अर्थ यह नहीं कि सरकार अपनी अकड़ पर अड़ी रहे। उसने ये कानून बनाने के पहले न तो किसान-संगठनों से बात की और न ही संसदीय समिति में इन पर बहस करावाई। इसलिए जो भी सुझाव आते हैं, उन पर वह अच्छी तरह से सोच-विचार करो। न्यूनतम सम्पर्कन मूल्य को कानूनी रूप दे देने से मूल समस्या हल हो सकती है लेकिन उससे कम या ज्यादा दर पर माल बेचने की छूट जरूरी होनी चाहिए। उस पर सजा या जुर्माने का प्राधान्य अनुचित होगा। मंडियों की संख्या बढ़ाना और उनकी व्यवस्था को अधिक किसान-हितकारी बनाना भी उतना ही जरूरी है।

टेक ज्ञान- Infinix Zero 8i ने की भारत में एंट्री

नई दिल्ली। इनफिनिक्स ज़ीरो 8आई को भारत में 14,999 रुपये में लॉन्च किया गया है। फिलफाटॉ पर फ़ेन को 18,999 रुपये की कीमत के साथ लिस्ट किया गया है, लेकिन कंपनी ने लॉन्च ऑफ़र के तहत फोन को लिमिटेड पीरियड के लिए छूट के साथ उपलब्ध कराया है।

पाठकों की बात

संवादों की कठिन

संवादों की कठिन ड्यार पर, चलना मुश्किल हो जाये तो आ जाना फिर मौन छाँव में,
कॉटि सारे चुन लूँगी। मेरे संग छत पर तुम बैठे, चंदो मुझको दिखलाओ तो,
अपनी खुशियाँ तुमको दे दूँ सपने गिरवी रख लूँगी। तोड़ सकें जब तटबन्धों को
भाव तुम्हारे सहज सरल हो, अपने उर के रिक्त पटल पर, नाम तुम्हारा लिख दूँगी।

- **वर्षा वर्षिता श्रीवास्तव**

एक छोटा रेलवे

एक छोटा रेलवे स्टेशन। एक चमकदार सुपर फास्ट ट्रेन अपने दम्भी अन्दाज मे चली जा रही है।ट्रेन को उस स्टेशन पर नही रूकना है।प्लेटफर्म पर लोग खड़े है , रूके आदमी है । उनकी आखो मे कौतुहल है, आश्चर्य है, निराशा है, सपने है। एक महाकाव्य को पीछे छोड़ेहुए ट्रेन गुम हो गई ।

- **शेष अमित**

पत्र, प्रतिक्रियाएं, सोशल मीडिया

.खास प्ताती.

द्वंद्व सा कुछ अंतर्तम में



द्वंद्व सा कुछ अंतर्तम में, विश्वास और अंधविश्वास के कटपरे में खड़ा मन!
तो क्या मेरा दृढ़ विश्वास उस विश्वास को पुख्ता कर रहा था, कि एक दिन जरूर आओगे मेरे घर !
और बरस भर बाद भी आकर खिड़कियों से ही, सकुशल देख वापस चले जाओगे!
कि बेटियों के घर तो बस मेहमान सा जाते हैं न ! कि देर रात तक खिड़की पे बैठ खो कबूतर, जाने कौन था... या है मेरे अंतर्तम में समा गया!
नेह की एक मिसाल बना गया !

- **सरिता खोवाला**

उतर गया सड़क पे अब तो आम

उतर गया सड़क पे अब तो आम आदमी। लगा रहा है हर तरफही जाम आदमी।
उपड़ की परवाह, न कोविड का भय रहा रो रहा है आज माथा थाम आदमी। हाथ पैर बन्धनों मे, बंध गया मर्तिफल लग रहा हर ईसा अब गुलाम आदमी।
प्रभु बचाइये हमे नेता औ नगरी से- ले रहा है अब तो नाम, -राम’’ आदमी। चला रहे तानाशाही यूँ पूरे देश मे- रह गया जनतंत्र बस नाम आदमी।
फिरकी कौनो ले रहा है दूर बैठ के- कर रहे हैं डर से सब सलाम आदमी।

योगीजी अच्छे अच्छे नायक नायिका
योगीजी अच्छे अच्छे नायक नायिका डिरेक्टर , गायक, गीतकार आदि को यूपी फिल्मसिटी ले जाइये और नशेड़ी भंगेडियों तमचे पे डिक्को करने वाले नचनियाँ को बॉलीवुड में ही रहने दीजिए , और हाँ योगीजी अक्की को भी अपने से दूर ही रखिए क्योंकि इससे हार्पिक की बू आती है।

- **राजीव वर्मा**

डॉ. श्रीनाथ सहाय

सभी का

अतिविश्वास बढ़ा हुआ है। जो मरीज टीक होकर लौटे हैं उनके अनुभवों से भी लोगों में उन्मीद जगी है। इसलिए पहले आगामी 5 और फिर उसके बाद के 15 दिन इस लड़ाई के अंजाम का काफी कुछ खुलासा कर देंगे। बेहतर हो जनता भी हालात की गंभीरता को समझकर लॉक डाउन को सफल बनाने में सहयोग दे। इसके अलावा और कोई रास्ता भी नहीं है। कोरोना लाईलाज नहीं है ये बात साफले पुष्टी है। भारत के पास उसकी दवाइयों का भी पर्याप्त स्टॉक है। यहाँ तक कि दुनिया के विकसित देश तक हमसे दवाइयां मंगवा रहे हैं। अब जबकि देश कोरोना से निपटने के लिए ह्द तहर से सक्षम है तब आने वाले 20 दिन और संयंत्र तथा अनुशासन का परिचय दे दिया जाए तो हो सकता है माई का दूसरा हाथा आते तक देश को विनाश पाताका पहरा देने का गौरव हासिल हो। लेकिन इस दौरान जरा सी गफ़ात भी महंगी पड़ सकती है।कोरोना वायरस सारी दुनिया के लिए एकदम नया है। ये कहां से आया है? कैसे ठेकेगा? इसका इलाज क्या है?



योगेश कुमार गोयल

ब्रह्मोस

मिसाइल मध्यम रेंज की रेजजेट सुपरसोनिक वरूज मिसाइल है, जिसे पनडुब्बियों, युद्धपोतों, लड़ाकू विमानों और जमीन से दागा जा सकता है। यह टस मीटर की ऊंचाई पर भी उड़ान भर सकती है और रडार के अलावा किसी भी अन्य मिसाइल पहचान प्रणाली को धोखा देने में भी सक्षम है, इसलिए इसे मार गिराना लगभग असंभव माना जाता रख है। इस मिसाइल का नाम भारत की ब्रह्मपुत्र नदी तथा रूस की मरकवा नदी को मिलाकर रखा गया है और इसका 12 जून 2001 को पहली बार सफल लांच किया गया था।

कोरोना से बचाव का सूत्र है सोशल डिस्टेंसिंग

कोरोना वायरस की महामारी से बचाव के लिए एक मात्र कारगर उपाय सोशल डिस्टेंसिंग है। इसको शत प्रशित पालन कराने के लिए सरकार अपने स्तर पर सारे प्रयास कर रही है। इसी के लिए सरकार ने लॉक डाउन की घोषणा की थी। पहले चरण में 21 दिन के बाद अब दूसरी बार 19 दिन का लॉक डाउन सरकार ने घोषित कर दिया है। हां, दूसरे चरण के लॉक डाउन में थोड़ी रियायतें भी देने के लिए सरकार ने विस्तृत गाइड लाइन भी जारी की है। लॉक डाउन की अवधि बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री ने देश को संबोधित किया। अपने संबोधन में श्री मोदी ने कोरोना के विरुद्ध जंग में भारत के प्रयासों को सफल बनाने हुए ये दावा किया कि यदि समय पर कदम न उठए होते तो स्थिति भयावह हो सकती थी किन्तु इसी के साथ चेताया भी कि जरा सी असावधानी से कोरोना का प्रकोप विस्फोटक हो सकता है। कोविड-19 भी स्पेनिश फ्लू के वायरस जैसा नहीं है। वैज्ञानिकों के लिए भी ये वायरस रिसर्च का विषय है। फिलहाल इस पर काबू पाने दवाइयां मंगवा उपाय है-सोशल डिस्टेंसिंग। इसके माध्यम से ही कोविड-19 की इन्फेक्शन चैन तोड़ी जा सकती है।

लॉक डाउन के दूसरे चरण से जुड़ी व्यवस्थाओं तथा 20 तारीख के बाद कोरोना से कम प्रभावित इलाकों के लिए मिलने वाली छूट के बारे में जानकारी कल दिए जाने की बात कहते हुए उनने ये आश्स्त किया कि जरूरी चीजों का पर्याप्त भण्डार होने के साथ लगभग 1 लाख बिस्तरी की व्यवस्था के साथ हजारों अस्पतालों को केवल कोरोना के लिए आरक्षित कर दिया गया है। लॉक डाउन की अवधि बढ़ाये जाने का सैद्धांतिक रूप में कोई विरोध नहीं करेगा। अधिकतर मुख्यमंत्रियों द्वारा पहले ही इसके बारे में सहमति दी जा चुकी थी। लगभग सभी देश लोगों को घरों में रहने, लॉकडाउन और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करने की

सलाह दे रहे हैं। इसका मकसद सिर्फ और सिर्फ लोगों को संक्रमित लोगों के संपर्क में आने से रोकना है। सेल्फ आइसोलेशन और क्वारंटीन सोशल डिस्टेंसिंग के ही अलग-अलग रूप हैं।

हॉर्बर्ड के वैज्ञानिकों ने चेताया है कि एक बार के लॉकडाउन से कोरोना वायरस की महामारी को पूरी तरह से नहीं रोका जा



सकता। इस खतरनाक वायरस से निपटने और हॉस्पिटलों को ओवरलोड होने से बचाने के लिए दुनिया को 2022 तक सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करना होगा। गौरतलब है कि हॉर्बर्ड की यह स्टडी उस समय आई है, जब अमेरिका में कोरोना के मामले उच्चतम स्तर पर पहुंच गए हैं और वहां सख्त लॉकडाउन के उपायों पर नरमी अस्थिराार करने के बारे में विचार किया जा रहा है।

साइंस जर्नल में प्रकाशित एक पेपर में हार्वर्ड टीम के कंप्यूटर सिमुलेशन ने माना है कि कोविड-19 मौसमी हो जाएगा। यह ठीक वैसे ही होगा जैसे सर्दियों के मौसम में लोगों को वायरल होता है। लेकिन अभी इस वायरस के बारे में बहुत सारी चीजें रहस्यमयी हैं, जिसमें पिछले संक्रमण के

गया। परीक्षण के दौरान एक अन्य द्वीप पर मौजूद लक्ष्य को ब्रह्मोस द्वारा सफलतापूर्वक नष्ट किया गया। इस परीक्षण की खास बात यह रही कि अब ब्रह्मोस मिसाइल के इस



संस्करण की मारक क्षमता 290 से बढ़कर 400 किलोमीटर हो गई है, जिसकी रफ्तार ध्वनि की गति से तीन गुना ज्यादा है। भारत द्वारा चीन और पाकिस्तान के साथ बढ़ते तनाव के बीच ब्रह्मोस के इस नए संस्करण को परीक्षण से पहले ही चीन के साथ लगती सीमा पर तैनात किया जा चुका है। सैन्य सूत्रों के अनुसार भारतीय वायुसेना और नौसेना अगले कुछ दिनों में ब्रह्मोस के कुछ और नए संस्करणों का भी अलग-अलग परीक्षण करेंगी। ब्रह्मोस अब न केवल भारत के तीनों सशस्त्र बलों के लिए एक बेहद शक्तिशाली हथियार बन गई है बल्कि गर्व का विषय यह है कि अभी तक जहां भारत अमेरिका, फ्रांस, रूस इत्यादि दूसरे देशों से मिसाइलें व अन्य सैन्य साजोसामान खरीदता रहा है, वहीं भारत अपनी इस सुपरसोनिक वरूज मिसाइल को दूसरे देशों को निर्यात करने की दिशा में अब तेजी से आगे बढ़ रहा है।

ब्रह्मोस मिसाइल को पनडुब्बियों, विमानों और जमीन से अर्थात् तीनों ही स्थानों से सफलतापूर्वक लांच किया जा

लेकिन ऐसा जब तक नहीं होता तब तक सोशल डिस्टेंसिंग अस्पतालों को उनकी क्षमता बढ़ाने के लिए समय देगा।

यदि देश में कोरोना के मामले तेजी से नहीं बढ़ेहोते तब भी लॉक डाउन बढ़ाना ही पड़ता क्योंकि चिकित्सा विशेषज्ञों का कहना है कि जो लोग ठीक हो गए उन्हें भी कम से कम दो सप्ताह सावधानी बरतनी होगी। जो लोग हाल ही में क्वारेंटाइन किये गये उनके बारे में अंतिम रिपोर्ट आना अभी बाकी है। सबसे बड़ी समस्या अभी भी तबलीगी जमात के वे सदस्य बने हुए हैं जो दिल्ली सामेगम से लौटने के बाद बजाय जाँच हेतु सामने आने के दुबके हुए हैं और न जाने कितने लोगों को कोरोना वायरस का संक्रमण दे चुके हैं। इसी तरह के और भी ऐसे लोग सामने आये हैं जिन्हें किसी अज्ञात व्यक्ति से संक्रमण मिला लेकिन वह कौन है ये पता नहीं लग रहा है।

कुछ चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार ये धारणा बदल रही है कि वायरस मात्र 14 दिन तक ही असरकारक रहता है। कई लोगों को उसने तीन सप्ताह बाद भी बीमार किया। ऐसे में लॉक डाउन को आगे बढ़ाना जरूरी के साथ ही मजबूरी भी था। भारतीय जनमानस भीड़ में अनुशासन के प्रति बेहद उदासीन हो जाता है। लॉक डाउन के दौरान ये देखने में भी आया है। इससे में जरा सी ढील उल्टे बांस बरती साबित हो सकती है। प्रधानमन्त्री इस बात को अच्छे से समझते हैं कि एक बार लॉक डाउन हटाने के बाद दोबारा लगाना मुश्किल होगा तथा ऐसा करने से सरकार की निर्णय क्षमता की भी आलोचना होगी। रेल व सड़क यातायात खोलने से भी कोरोना का खतरा फिर बढ़ सकता है। ये सब देखते हुए ही दूसरे चरण में 3 माई की तारीख तय की गई है। शुरुवाती दौर में कोरोना से लड़ने में तैयारियां अव्यवस्थित थीं लेकिन बीते 21 दिन में शासन - प्रशासन, पुलिस, स्थानीय निकाय और चिकित्सा अमला कोरोना से जुड़े प्रबन्धन में अनुभवी हो गया है।

ब्रह्मोस बनी तीनों सशस्त्र बलों का बेहद शक्तिशाली हथियार

किसी भी लक्ष्य पर हर मौसम में सटीक हमला करने के लिए सक्षम बनाती है। बेहद ताकतवर ब्रह्मोस सुपरसोनिक वरूज मिसाइलें भारतीय वायुसेना के 40 से भी अधिक सुखोई लड़ाकू विमानों पर लगाई जा चुकी हैं, जिससे सुखोई लड़ाकू विमान पहले से कई गुना ज्यादा खतरनाक हो गए हैं। हाल ही में सुखोई-30 लड़ाकू विमान ने एक ऑपरेशन के तहत पंजाब के हलवारा एयरबेस से उड़ान भरते हुए ब्रह्मोस सुपरसोनिक मिसाइल से बंगाल की खाड़ी में अपने टारगेट को निशाना बनाया था। उल्लेखनीय है कि सुखोई विमान की दूर तक पहुंच के कारण ही इस विमान का 'हिंद महासागर क्षेत्र का शासक' भी कहा जाता है और ब्रह्मोस से लैस सुखोई तो अब दुश्मनों के लिए बेहद घातक हो गए हैं।

मिसाइलें प्रमुख रूप से दो प्रकार की होती हैं, वरूज मिसाइल और बैलिस्टिक मिसाइल। वरूज और बैलिस्टिक मिसाइलों में अंतर यही है कि वरूज मिसाइल बहुत छोटी होती हैं, जिन पर ले जाने वाले बम का वजन भी ज्यादा नहीं होता और अपने छोटे आकार के कारण उन्हें छोड़े जाने से पहले बहुत आसानी से छिपाया जा सकता है जबकि बैलिस्टिक मिसाइलों का आकार काफी बड़ा होता है और वे काफी भारी वजन के बम ले जाने में सक्षम होती हैं। बैलिस्टिक मिसाइलों को छिपाया नहीं जा सकता, इसलिए उन्हें छोड़े जाने से पहले दुश्मन द्वारा नष्ट किया जा सकता है। वरूज मिसाइल वे मिसाइलें होती हैं, जो कम ऊंचाई पर तेजी से उड़ान भरती हैं और रडार की आंख से भी आसानी से बच जाती हैं। बैलिस्टिक मिसाइल उर्ध्वाकार मार्ग से लक्ष्य की ओर बढ़ती हैं जबकि वरूज मिसाइल पृथ्वी के समानांतर अपना मार्ग चुनती हैं। छोड़े जाने के बाद बैलिस्टिक मिसाइल के लक्ष्य पर नियंत्रण नहीं रहता जबकि वरूज मिसाइल का निशाना एकदम सटीक होता है।

QUIZ TIME

- वाकाटक नरेशों को बस्तर के किस राजवंशी शासकों से संघर्ष हुआ ?
- छतीसगढ़ के किन क्षेत्रों में नरबलि की प्रथा प्रचलित थी ?
- छतीसगढ़ में देश का लगभग कितने प्रतिशत तेन्दु पत्ता उत्पन्न होता है?
- छतीसगढ़ राज्य में दुर्लभ प्रजाति का अजगर पाइथन रेटिकुलेटस किस जिले में पाया जाता है ?
- ‘मुक्तिबोध के नाम से कौन जाने जाते हैं?

प्रश्न (5) का उत्तर
उत्तर (5) का उत्तर
प्रश्न (4) का उत्तर
उत्तर (4) का उत्तर
प्रश्न (3) का उत्तर
उत्तर (3) का उत्तर
प्रश्न (2) का उत्तर
उत्तर (2) का उत्तर
प्रश्न (1) का उत्तर

आज का इतिहास

नई दिल्ली। 1748- नमकों पर शोध करने वाले फ्रांस के रसायन शास्त्री बर्टले का जन्म। 1791- दुनिया का पहला रविवार का अखबार द ऑब्ज़र्वर लंदन में प्रकाशित हुआ। 1796- बाजीराव द्वितीय पेशवा नियुक्त हुए। 1829- वायसराय लार्ड विलियम बेंटिक ने सती प्रथा समाप्त की। 1833- आर्थर तप्पान द्वारा फिन्डोर्लेक्स में अमेरिकी एंटी-स्लेवरी सोसाइटी गठित की गयी। 1859- मेकटेब-ए मुल्कियाय स्कूल ओटोमन साम्राज्य में स्थापित किया गया। 1860- गोवा के मारागव के अगस्टिनो लॉरेंसो ने पेरिस विश्वविद्यालय से रसायन विज्ञान में डॉक्टरेट की उपाधि ली। वह विदेशी विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि पाने वाले पहले भारतीय थे। 1881- लॉस एंजिल्स टाइम्स का पहला संस्करण

प्रकाशित। 1910- हिन्दी सिनेमा के अभिनेता मोतीलाल का जन्म। 1919- पूर्व प्रधानमंत्री इन्द्र कुमार गुजराल का जन्म। 1952- इंग्लैंड में कोहरे की घनी परत के छत्र जाने के कारण हजारों लोगों की मौत। 1963- अभिनेता जावेद जाफरी का जन्म। 1967- देश के पहले रॉकेट ‘रोहिणी आरएच 75’ का थ्रम्बा से प्रक्षेपण हुआ। 1996- अमेरिका की अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने मंगल ग्रह के लिए एक और अंतरिक्ष यान ‘मार्स पाथफ़ाइंडर’ प्रक्षेपित किया। 2004- पेरु की मारिया जुलिया मातिला गार्शिया को मिस वर्ल्ड 2004 चुना गया। 2006- फिफ़ीपीस के एक गाँव में तूफ़ान के बाद जमीन धंसने से लगभग एक हजार लोगों की मौत।

राष्ट्रीय श्रम संगठन के आव्हान पर देश व्यापी आम हड़ताल के तहत जिला बीबी मजदूर सभा समोह के द्वारा प्रधानमंत्री के नाम कलेक्टर को एक पत्र लिखा सौंपा गया। जिला बीबी मजदूर सभा दमोह (एटक) के प्रधानमंत्री एमएस गौतम अध्यक्ष, अंकित गौतम साथी विवेक बड़ौया, राहुल शर्मा, अफजल खान, शाहिद खान, प्रजपाति एवं दिनेश अहिरवाल के नेतृत्व में गुबुकार कर जिलाधीश कार्यालय पर एकत्रित होकर देशव्यापी आम हड़ताल कर जिला सौंपा गया। अध्यक्ष एमसी गौतम ने मांगें बताते हुए जिसमें सभी गैर आयकर दाता परिवारों के लिये प्रतिमाह 7500 रुपये का नगद हस्तांतरण हो, साथ ही जरूरतमंदों को प्रति वित्तिये प्रतिमाह 10 किलो मुफ्त राशन दिया जायें, ग्रामीण क्षेत्रों में एक साल में 200 दिनों के काम को बढ़ाने के लिये मनरेगा का विस्तार करें तथा शहरी क्षेत्रों में रोजगार गारंटी का विस्तार किया जावें, सभी किसान विरोधी कानूनों और मजदूर विरोधी श्रम सहित को वापिस लिया जाए, वित्तीय क्षेत्र सहित सार्वजनिक क्षेत्र के निजीकरण को रोकें और रेवेनू, आयुध कारखानों, बंगराहा आदि जैसे सरकारी विनिर्माण उम्काम और सेवा संस्थाओं के कारपोरेटीकरण के बंद किया जाए, सरकारी और पीएसयू कर्मचारियों की समय से पहले सेवानिवृत्ती के कुराहण, सरकर को वापिस लिया जायें।

राष्ट्रीय श्रम संगठन के आव्हान पर देश व्यापी आम हड़ताल के तहत जिला बीबी मजदूर सभा दमोह के द्वारा प्रधानमंत्री के नाम कलेक्टर को एक पत्र भेजा गया। जिला बीबी मजदूर सभा दमोह (एटक) के प्रधानमंत्री एमसी गौतम अध्यक्ष, अंकित गौतम साथी विवेक बड़ौया, राहुल शर्मा, अफजल खान, शाहिद खान, प्रजपाति एवं दिनेश अहिरवाल के नेतृत्व में गुबुकार कर जिलाधीश कार्यालय पर एकत्रित होकर देशव्यापी आम हड़ताल कर जिला सौपा गया। अध्यक्ष एमसी गौतम ने मांगें बताते हुए जिसमें सभी गैर आयकर दाता परिवारों के लिये प्रतिमाह 7500 रुपये का नगद हस्तांतरण हो, साथ ही जरूरतमंदों को प्रति वित्तिये प्रतिमाह 10 किलो मुफ्त राशन दिया जायें, ग्रामीण क्षेत्रों में एक साल में 200 दिनों के काम को बढ़ाने के लिये मनरेगा का विस्तार करें तथा शहरी क्षेत्रों में रोजगार गारंटी का विस्तार किया जावें, सभी किसान विरोधी कानूनों और मजदूर विरोधी श्रम सहित को वापिस लिया जाए, वित्तीय क्षेत्र सहित सार्वजनिक क्षेत्र के निजीकरण को रोकें और रेवेन्यू, आयुध कारखानों, बंगराहा आदि जैसे सरकारी विनिर्माण उम्काम और सेवा संस्थाओं के कारपोरेटीकरण के बंद किया जाए, सरकारी और पीएसयू कर्मचारियों की समय से पहले सेवानिवृत्ती के कुराहण, सरकर को वापिस लिया जायें।

